Date - 19/08/2020

Dr. Sanehlata
Asst. Professor (Guest faculty)
Dept. of Philosophy
Women's college, Samastipur
Email Id. - Snehababli 1987 @ gmail.com
Cont. no. - 8409587640

Class - B.A. - I (Hons.)

Topic - Asat - Khyativada : Mimamsa

असत्ख्याति या शून्यताख्याति (माध्यमिक शून्यवाद)

माध्यमिक शून्यवादियों का भ्रम संबंधी सिद्धान्त असत्ख्यातिवाद कहलाता है। इनके अनुसार शून्य ही परम सत् है। इसके अतिरिक्त सभी असत् हैं। यहाँ ज्ञाता, ज्ञान और ज्ञेय तीनों को असत् माना गया है। यहाँ असत् का आशय अस्तित्व विहिनता नहीं है। यहाँ इसका आशय है कि उसका कोई निश्चित,

स्वतंत्र और निरपेक्ष अस्तित्व नहीं है। ये स्वरूपतः एवं स्वभावतः शून्य हैं अतः वे असत् हैं। भ्रम में भी असत् वस्तु का ही ज्ञान प्राप्त होता है, इसलिए इनका ख्याति संबंधी सिद्धान्त असतख्यातिवाद कहलाता है।

आलोचना : नैयायिकों के अनुसार शून्यवादियों के असत ख्यातिवाद को नहीं माना जा सकता। यहाँ असत के दो अर्थ संभव हैं—

(1) किसी ऐसी वस्तु का ज्ञान जिसका कहीं कोई वास्तविक अस्तित्व नहीं हो।

(2) किसी ऐसी वस्तु का ज्ञान जो प्रस्तुत संदर्भ में अनुपस्थित है, परन्तु अन्यत्र विद्यमान है।

यहाँ पहले विकल्प को नहीं माना जा सकता, क्योंकि हमें असत वस्तु का ज्ञान नहीं होता। पुनः दूसरे विकल्प को मानने पर विपरीत ख्यातिवाद की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

यदि सभी पदार्थ एवं विषय असत् हैं तो फिर जिस प्रकार भ्रम का विषय असत है, उसी प्रकार यथार्थ ज्ञान का विषय भी असत होगा। ऐसी स्थिति में प्रमा की उत्पत्ति की व्याख्या नहीं की जा सकती।